AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

अद्वैत वेदांत में ब्रह्म का स्वरूप

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. मंजू सिंह ठाकुर
विभागाध्यक्ष, योग–विभाग
अग्रसेन महाविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

अद्वैत वेदांत हिंदू धर्म का सर्व प्रमुख दर्शन समझा जाता है। भारतीय दर्शन के प्रमुख दर्शनों में अद्वैत वेदांत का स्थान है। यहां हम अद्वैत वेदांत में ब्रह्मा तत्व की विवेचना कर रहे हैं। अद्भुत से तात्पर्य है परम तत्व एक ही है, इसके अतिरिक्त अन्य किसी की सत्ता नहीं है। ब्रह्मा शब्द धातु से निष्पक्ष होता है जिसका अर्थ है बढ़ना या निरंतर वृद्धि करना। शंकर के अनुसार ब्रह्मा ही जगत का मूल कारण है जो मूल रूपों में प्रकट होने पर भी निर्गुण, निराकार और निर्वयव ही रहता है। ब्रह्मा सबका आदि कारण और मूल स्रोत है। शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्मा की सत्ता अनंत और अखंड है। ब्रह्मा को सच्चिदानंद की संज्ञा दी गई है। शंकर ब्रह्मा को परमार्थिक सत्ता मानते हैं। शंकर के अनुसार ब्रह्मा सत्य हैं, निर्गुण है अर्थात् देशकालादि बंधन से मुक्त है, अर्थात् हम कह सकते हैं कि ब्रह्मा इस संसार के करता और पालक हैं।

मुख्य शब्द

अद्वैत, वेदांत, धर्म, दर्शन, ब्रह्मा.

दर्शनशास्त्र का प्रमुख लक्ष्य है– परम तत्व के स्वरूप एवं उसके गुणों का विवेचन करना। परमतत्व क्या हैं? वह जड़ है या चेतन, निराकर है या साकार तथा उसके अन्य लक्षण क्या है आदि का विवेचन दर्शनशास्त्र करता है। सृष्टि के प्रारंभ से ही मनुष्य में सृष्टि के मुल तत्व को जानने की जिज्ञासा रही है। वह अनेकताओं के मध्य आधारभूत एकता को जानना चाहता हूँ।

अद्वैत वेदांत हिन्दू धर्मावलम्बियों का सर्वप्रमखु दर्शन समझा जाता है। उसका भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान है। यह मानना ही पड़ेगा कि अद्वैत वेदांत उपनिषदों के बहुत निकट है। अद्वैत वेदान्त की विशेष मान्यता का कारण उसकी दार्शनिक प्रौढ़ता भी है। अद्वैत वेदांत की मुख्य मान्यातायें तीन या चार रही हैः–

1. एक मात्र तात्विक पदार्थ निर्गुण कूटस्थ नित्य सच्चिदानंद ब्रह्म है।
2. जीव और ब्रह्म एक ही है।
3. जीव और ब्रह्म में भी भेद दिखाई देता है, अथवा जीव जो बंधनग्रस्त दिखाई पड़ता है उसका कारण अविधा है।
4. यह दृश्यमान जगत् माया का कार्य मिथ्या है। ऋग्वेद के दशम मंड़ल में स्पष्टतः ''केश्वरवाद की भावना का विकास दिखाई देता है। ऋग्वेद में कहा गया है "एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" अर्थात् परमतत्व एक है विद्वान

उसे अनेक नाम से पुकारते हैं। उपनिषद् में कहा गया है–

"ईशा भाष्य मिदम् सर्वम् यतकिंचिंतगत्याम् जगत।"

ईश्वर से ही सब कुछ परिपूर्ण है। सारा जगत ईश्वर मय है। सृष्टि की अनेकता विभिन्नता आदि का आधार और आदि कारण ईश्वर है। उपनिषदों में ऐसे अनेक मंत्र और श्लोक मिलते हैं जो स्पष्ट रूप से परम सत् का प्रतिपादन करते हैं जिसे वे आत्मा या ब्रह्म के नाम से पुकारते हैं। उदाहरण स्वरूप "सदैव सौम्येदम अग्रस आसीत" अर्थात् यह है कि आरंभ में जब कुछ भी नहीं था केवल आत्म तत्व ही था, आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था।

राधाकृष्णन के अनुसार सबकुछ असत् है कुछ भी सत् नहीं है। यथार्थता की खोज सत्य का जानने का प्रयत्न इत्यादि से तात्पर्य यह है कि परिवर्तनशील संसार असत् है।[2]

काल चक्र तीव्र गति से घूम रहा है, जीवन क्षणभंगुर है, सब कुछ परिवर्तन के अधीन है।[3] शंकराचार्य के अनुसार एकमात्र परम तत्व "ब्रह्म" है। इस प्रकार सर्वोच्च परमार्थ सत्य है।

"एकमेव ही परमार्थ सत्यं ब्रह्म।"[4]

ब्रह्म तीनों काल में बाध्य रहित है, अतः ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है। शंकराचार्य ने ब्रह्मसूत्र भाग्य में परम तत्व की परिभाषा दी है– नामरूप के द्वारा अव्यक्त अनेकताओं एवम् भोक्ताओं से संयुक्त ऐसे क्रिया और फल के आश्रय जिससे देश, काल, नियगित और व्यवस्थित है। मन से जिसकी रचना के स्वरूप का विचार नहीं हो सकता। इस जगत की उत्पत्ति स्थिति एवं नाश जिस सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान कारण से होते हैं। वह ब्रह्म ही है।[5]

शंकराचार्य के अनुसार परम तत्व के लक्षण इस प्रकार है– सर्व व्यापकता, अधिष्ठाता सर्वज्ञाता एवं सर्वशक्तिमता इस प्रकार शंकर वेदांत के अनुसार ब्रह्म सर्वोच्च सता है, वहीं परम तत्व है।

"ब्रह्मवसानोऽयं प्रतिषेधः ना भवावसानः।"[6]

ब्रह्म का स्वरूप– उपनिषदों के सूक्ष्म तत्वों की विवेचना करने का नाम ही शांकर का अद्वैत वेदांत है। अद्वैत का अर्थ है कि "परम तत्व एक ही है" इसके अतिरिक्त अन्य किसी की सता नहीं है। चूँकि उनके मत में परम तत्व एक से अधिक हो जाने पर वे परस्पर एक–दूसरे पर निर्भर हो जायेंगे। इस परम तत्व को आत्मा और सत् का गया है "अयमात्मा ब्रह्म"।

ब्रह्म शब्द का अर्थ– ब्रह्म शब्द वह धातु से निष्पक्ष होता है जिसका अर्थ है "बढ़ना" या वृद्धि को प्राप्त होना है। वृद्धि को प्राप्त करने वाला महान् कहा जाता है।

शंकर के अनुसार ब्रह्म निरतिशय, भूमाख्य आदि है, क्योकि वह सबसे महान् है। इसे ब्रह्म की संज्ञा इसलिए दी गई है कि यह सबसे बड़ा और महान् है। ब्रह्म ही जगत् का मूल कारण है, जो मूल रूपों में प्रगट होने पर भी निर्गुण, निराकार और निरवयव ही रहता है इसीलिए इसे अद्वितीय कहा गया है।

ब्रह्म ही सर्वोच्च सता है– उसकी सता देश और काल से परे है, वह सर्वत्र व्याप्त है परन्तु कहीं दिखाई नहीं पड़ता। ब्रह्म स्वतः सिद्ध है। इसकी सता के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

ब्रह्म अद्वैत है– ब्रह्म के समान कोई दूसरी वस्तु नहीं है। इस प्रकार ब्रह्म अद्वैत है।

ब्रह्म अनादि और अनंद है– किसी त्तव को अनादि और शांत तभी कहा जा सकता है, जब उसकी उत्पति होती है।

ब्रह्म निरतिशेष सत् है– ब्रह्म विशेषों से रहित है, ब्रह्म सर्वग्राही है, वह सामान्य है, सब उसमें विद्यमान है, परन्तु वह किसी के विचार से प्रभावित नहीं हैं।

"आत्मानमेंव निर्विशेष ब्रह्म विद्वि।"

ब्रह्म निर्गुण है – गुणों का होना ही सीमित होना है। किसी भी वस्तू को गुणों से रहित नहीं कहा जा सकता है। कोई भी वस्तु गुणों के कारण ही मोह या माया में पड़ती है, ब्रह्म किसी से प्रभावित नहीं होता, ब्रह्म निर्गुण है।

ब्रह्म निर्गुण – गुणों का होना ही सीमित होना है। किसी भी वस्तु को गुणों से रहित नहीं कहा जा सकता हैं। कोई भी वस्तु गुणों के कारण ही मोह या माया में पड़ती है। ब्रह्म किसी से प्रभावित नहीं होता। ब्रह्म निर्गुण है।

ब्रह्म परम् सत् है– ब्रह्म ही एक सत् है। शंकराचार्य जगत् की मिथ्या बताते हैं। ब्रह्म निरपेक्ष सत् है। वह किसी पर आधरित नहीं है। उसे किसी की अपेक्षा नहीं है। वह सर्वतंत्र, स्वतंत्र है।

ब्रह्म स्वतः सिद्ध है– ब्रह्म को सबकी आत्मा कहा गया है, चूँकि अपनी आत्मा के अस्तित्व से इंकार नहीं कर सकते। आत्मा की सत्ता से ब्रह्म के सत्ता सिद्ध होती है। आत्मा की ब्रह्म है, और ब्रह्म ही आत्मा है। ऐसा कहा जाता है।

"सर्वोहि आत्मास्तित्व प्रत्येति, न नाहमस्मीति।
यदिहि नात्मत्वप्रसिद्धिः रयात सर्वोलोकोनात्मीति प्रतियात।।"[9]

ब्रह्म निरूपाक्षिक है– ब्रह्म को उपाधि रहित बताते हैं। ब्रह्म सत्य का सत्य हैं।

"ब्रह्म सत्यस्य सत्यम्।"[10]

ब्रह्म स्वयं प्रकाश है– ब्रह्म का ज्ञान उसके स्वरूप से भिन्न नहीं है, जैसे सूर्य की रोशनी सूर्य से भिन्न नहीं हैं। ब्रह्म स्वयं चेतन है। अतः ब्रह्म जगत् का ज्ञान ब्रह्म के प्रकाश के कारण हैं। श्वेता–श्वेताश्वतरोपनिषद् के शब्दों में "उसके चमकने से सभी चमकते है, उसी के कारण ये सब ज्योतित है। तमेंव भान्तभनुमाति सर्वतस्य मासासर्वीमदं विभाति।"[11]

ब्रह्म भेद रहित हैं– ब्रह्म को समस्त भेदों से रहित कहा गया है। ब्रह्म अनंत और असीम हैं।

ब्रह्म सच्चिदानंद है– ब्रह्म के लिए तीन गणों का प्रयोग हुआ हैं सत्+चित+आनंद।

ब्रह्म पूर्ण सत्य है – पूर्ण चेतन स्वरूप हैं, सभी प्राणी उसकी चेतन है। शंकराचार्य, वेद, उपनिषद् और भगवद्गीता के अनुसार भी ब्रह्म सत् चित और अनंत आनंद है।

अनंत सत–ब्रह्म अनंत सत् हैं। सत्ता ब्रह्म का गुण नहीं है। सत्ता ही ब्रह्म है।

[12]

ब्रह्म सबका आदिकारण और मूल स्त्रोत है, ऐसा शंकराचार्य मानते हैं। ब्रह्म की सता अनंत और अखंड है। वह अविभाज्य है, उसे विभाजित नहीं किया जा सकता वह अनंत है।

अनंतचित– शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म अनंत चित हैं। जो सत् है, वह चित है, और चित है, वही सत् है। सत्ता ही ज्ञान है, और ज्ञान ही सत्ता है।

अनंत आनंद – अद्वैत वेदांत कि विशिष्टता है कि वह ब्रह्म को अनंत सत् और आनंत चित् के साथ अनंत आनंद भी मानता है। शंकर आनंद को ब्रह्म का गुण नहीं वरन् ब्रह्म का स्वभाव मानते है।

"आनंदम् ब्रह्मोजि व्यजानात्।"[13]

तैन्तिरीय उपनिषद् के अनुसार आनंद से ही संसार की उत्पत्ति होती हैं। आनंद में ही संसार निहित है। अंत में यह संसार आनंद में ही मिल जाता हैं। अतः आनंद ही ब्रह्म है।

"आनंदाध्ययेन खतिवमानि मूतानि जायते।"

तैन्तिरीय उपनिषद् के अनुसार आनंद से ही संसार की उत्पत्ति होती है, आनंद में संसार निहित है, अंत में यह संसार आनंद में ही मिल जाता है, अतः आनंद ही ब्रह्म है।

"आनंदाध्येन खतिवमानि मुतानि जायते।"
आनंदेन जातानि जीवन्ति।।
आनंदम् प्रयन्त्यमिसंविशन्ति।।[14]

ब्रह्म पारमार्थिक सत्ता है– शंकराचार्य के दर्शन में हमें तीन सत्ताएँ मिलती है।

(1) पारमार्थिक सत्ता (2) व्यावहारिक सत्ता (3) प्रतिभसिक सत्ता या भ्रमात्मक सत्ता।

ब्रह्म सत्ता पारमार्थिक सत्ता है, देश, काल, कार्य कारण से संबंधित संसार व्यावहारिक सत्ता के अन्तर्गत आता है। कल्पनात्मक पदार्थ सीप में चाँदी प्रतिभासिक सत्ता के अंतर्गत आता है।[15]

ब्रह्म की सत्ता "पारमार्थिक" तात्विक सत्ता है इसका कभी बोध नहीं होता। स्वप्न के पदार्थो की भी भ्रमात्मक सत्ता है। भ्रमात्मक सत्ता वाले पदार्थ सब देखने वालो के लिए एक से नहीं होते। भ्रम या स्वप्न के पदार्थो का ज्ञान जाग्रतावस्थ अथवा ठीक व्यावहारिक ज्ञान होने से हो जाता है।

वास्तविका ज्ञान ब्रह्म के अलावा और किसी का नहीं होता। ब्रह्म के अतिरिक्त और कोई भी सत्य पदार्थ नहीं है। ब्रह्म की सत्ता ही पारमार्थिक, नित्य और शाश्वत् है।[16]

शंकराचार्य ने ब्रह्म को सर्वज्ञ कहा है। अर्थात् ब्रह्म पूर्णतया ज्ञान का रूप है।

"सर्व च तज्ज्ञस्वरूप च चेति सर्वज्ञम्"[17]

ब्रह्म अज्ञेय है। निर्गुण ब्रह्म कारण रूप भी नहीं है। शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म सत्य है। इसका तात्पर्य यह है, कि देशकालादि बंधन से मुक्त है।

"दिक् देश कालादि भेदशून्यम्।
निर्गुणम् अयमहि ब्रह्मः।।"[18]

ब्रह्म प्रमाणातीत है। वह प्रमाणों की अपेक्षा नहीं करता परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि ब्रह्म कल्पना कि वस्तु है। चिन्हों का अभाव नहीं होने पर भी ब्रह्म अनुमान का विषय नहीं है।[19]

आत्मरूप से ब्रह्म का ज्ञान स्वयं सिद्ध है। शंकराचार्य ने निर्गुण ब्रह्म को अद्वैत वेदांत का सर्वोत्तम सत्ता माना है।

ब्रह्म त्रिगुणात्मिकता प्रकृति तथा माया से अवशिष्ट होने के कारण निर्गुण है। शंकर वेदांत के अनुसार यहीं निर्गुण ब्रह्म का मुल स्वरूप है।

समस्त जीवो का फल प्रदाता ब्रह्म ही है। इस प्रकार सगुण रूप में ब्रह्म को उन समस्त गुणों से युक्त माना गया है जिसकी जगत् की उत्पत्ति के लिए आवश्यक माना गया है। उपनिषदों में ब्रह्म के अनिर्वचनीयता के लिए नेति–नेति का उपयोग हुआ है।

सगुण ब्रह्म– अद्वैत वेदांत में ब्रह्म को परमार्थतः निर्गुण और निर्विशेष और समस्त भेदों से रहित माना गया है, परन्तु ब्रह्म का दुसरा रूप भी है, सगुण रूप, जिससे जगत् की उत्पत्ति होती है।

"नामरूप से व्यक्त, अनेक कार्य भोक्ताओं से युक्त तथा जिसके रूप की कल्पना मन के द्वारा नहीं की जा सकती हैं। इस प्रकार से जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय को करने वाला ब्रह्म ही है।"[20]

ब्रह्म ही समस्त जगत् का उपादान कारण और निमित्त कारण है। ऐसा ही ब्रह्म ईश्वर है। अतः सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलय का कर्ता ईश्वर है।

आचार्य शंकर के अनुसार – "परम ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति करना वेदांत की मर्यादा है।[21] ब्रह्म सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है, ईश्वर ही ब्रह्म है।"

ब्रह्म माया की उपाधि से युक्त होकर भी माया से अस्पष्ट रहता है। शंकर मानते है कि अपने स्वरूप का नाश हुए बिना ब्रह्म सृष्टि की उत्पत्ति करते है।

उपनिषदों में सगुण ब्रह्म को "अपर ब्रह्म" कहा गया है। ब्रह्म का यह स्वरूप तटस्थ लक्षण है। व्यावहारिक दृष्टि से जगत् को सत्य माना जाता है। माया से युक्त ब्रह्म, इस संसार का कर्ता, पालक और संहारकर्ता है। वह समस्त जीवों के कर्म का फलदाता तथा विश्व निर्माता है।

निष्कर्ष

अद्वैत वेदांत में ब्रह्मा को निर्गुण और निर विशेष और समस्त वेदों से रहित माना गया है किंतु दूसरी तरफ ब्रह्मा शगुन भी है और हम यह मानते हैं कि ब्रह्मा से ही जगत की उत्पत्ति होती है। ब्रह्मा को ही ईश्वर मानते हैं और ब्रह्मा ही सर्वाधिक शक्तिशाली हैं। इस जगत में समस्त जीवों के कर्म के अनुसार फल देने वाले और इस सृष्टि के निर्माता भी ब्रह्मा ही है, अर्थात् हम कह सकते हैं कि ब्रह्मा ही इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति और अंत का कारण है।

संदर्भ सूची

1. वृहदारण्यक उपनिषद् 4–2–30
2. भारतीय दर्शनः डॉ. राधाकृष्णन भाग–2 पृ. 528
3. भारतीय दर्शनः डॉ. राधाकृष्णन भाग–2 पृ. 528
4. तैत्तिरिय उपनिषद्–शांकर भाष्य 318
5. ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य–1–1–2
6. ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य–3–2–22
7. निरतिशयं भूमारण्यं वृहतवाद ब्रह्मेतिबिद्धि– के. उप. शा. मा. 1–5
8. केनोपनिषद्–शांकर भाष्य 5
9. वृहदारण्यक कोप उपनिषद्–2–4–14
10. तैत्तिरिय उपनिषद्–3–2–5
11. श्वेताश्वतरोपनिषद्–6–14
12. शांकर भाष्य–2–21
13. तैतिरीय उपनिषद्–3,6
14. तैतिरीय उपनिषद्–316
15. सिद्धान्तलेश संग्रह–1–2
16. भारतीय दर्शनः – डॉ. देवराज पृ. 538
17. शांकर भाष्य–3136
18. ब्रह्मसूत्र शा. मा. –4–3–14
19. ब्रह्मसूत्र शा. मा. –4–3–14
20. ब्रह्मसूत्र शा. मा. –1–1–2
21. केनभाष्य 1–3

––==00==––